॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब संध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह संध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती हैं। जब देवता संध्या के द्वार पर जाते हैं तो संध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओंगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओगे।

अतः संध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 564 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 639
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-17
4. यागमयी जीवन	पूज्यपाद-गुरुदेव	18-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय एवम् ज्येष्ठ शिष्य के 77वें जन्मोत्सव की पावन वेला के शुभागमन दिनाँक 15 सितम्बर से 17 सितम्बर 2019 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ गाँधी धाम समिति (पञ्जी.) के द्वारा मनाया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योग निष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि हमारा प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में मानो वसुन्धरा की प्रतिभा का प्रायः वर्णन आता है।

वसुन्धरा की मीमांसा

आज का हमारा वेद मन्त्र उस माता की याचना कर रहा था जो ममत्व को धारण करने वाली है जिसे वेद वसुन्धरा के नामों से वर्णन कर रहा है। वेद का मन्त्र कहता है वसुन्धरम् ब्रह्म वाचो देवाः। हे माता! तू वसुन्धरा है। वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि इसके गर्भस्थल में, प्रायः जो हमें धारण कर रही है अथवा हमें बसा रही है, उस माता का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। परन्तु आज का वेद मन्त्र यह कह रहा है—हे माता! तेरे ही गर्भस्थल में तो हम वास करते हैं, अथवा बस रहे हैं।

मुनिवरों! देखो सबसे प्रथम ममत्व को धारण करने वाली जननी माता कहलाती है। वेद का मन्त्र यह कहता है वसुन्धरम् ब्रह्म वाचक प्रभा लोकाम्। मानो देखो वह वसुन्धरा कहलाती है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना आती रहती है। वसुन्धरा नाम उस परमपिता परमात्मा का है जो इस संसार को अपने में बसा रहा है अथवा अपने में धारण कर रहा है, उस प्रभु का नाम वसुन्धरा कहलाता है। परन्तु द्वितीय रूपों में वसुन्धरा नाम उस माता को कहा जाता है जिस माता के गर्भस्थल में बेटा! हम जैसे पुत्र पनपते रहते हैं अथवा जिनका निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो मेरी भोली माता को तो ज्ञान नहीं है परन्तु जब हम माता के गर्भस्थल में विद्यमान रहते हैं तो माता के गर्भस्थल में बेटा! एक बिन्दु है। उस बिन्दु में भी एक शिशु है और मुनिवरों! जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में प्रवेश हुआ तो मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो उसमें चन्द्रमा अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है, अग्नि ऊष्णता देने लगती है, वायु प्राण देने लगता है और अन्तरिक्ष उसे अवकाश देता है। परन्तु पृथ्वी उसे गुरुत्व देती है। मेरे प्रभु तू कितना निर्माणवेत्ता है। मेरी भोली माता नहीं जानती कि कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। उसे शिशु का भी भान नहीं होता। परन्तु जब हम वैदिक साहित्य में प्रवेश करते हैं तो मेरे प्यारे! वो वसुन्धरा नाम की जो माता है, उसके ही गर्भस्थल में जो बसा रही है। हमारे इस मानव शरीर का जब निर्माणवेत्ता, वह प्रभु निर्माण करता है तो हमारे शरीर में बेटा! बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हज़ार दो सौ दो (72,72,10,202) नाड़ियों का निर्माण कर देता है। हे प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करता रहा है। नाना प्रकार की विज्ञान की धाराओं में रत्त रहा है। जब प्रभु के विज्ञान के ऊपर बेटा! हम अन्वेषण करते हैं अथवा विचार-विनिमय करते हैं तो अनन्तमयी दृष्टिपात होने लगता है।

मेरे प्यारे! वो कितना विज्ञानवेत्ता है। मानव का शरीर निर्माणित किया तो बेटा! देखो कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! प्रभु ने बेटा! मनस्तत्त्व, बुद्धित्व चित्तम् भविते लोकाम्। मानो देखो, बुद्धि के चार प्रकार कहे जाते हैं। बुद्धि भी एक प्रकार की नहीं कहलाती। बेटा! बुद्धि, हमारे यहाँ बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। परन्तु देखो, इस संसार को एक दृष्टा के रूप में दृष्टिपात करती रहती है। एक मानो उसको साक्षात्कार लाती है और साक्षात्कार जानकर के उसमें मौन हो जाती है और मौन हो कर के वह बेटा! उसके पश्चात् वो प्रज्ञावी में प्रवेश होकर के बेटा! प्रभु का दिग्दर्शन कर लेती है। तो मेरे प्यारे! देखो ये चार प्रकार की एक अनुपम मुनिवरों! देखो बुद्धि की प्रतिभा कहलाती हैं जिसके ऊपर हमारे यहाँ परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण होता रहा है अथवा विचार-विनिमय होता रहा है।

हे नमम् ब्रह्म वाचाहा, हे माता! तू वसुन्धरा है परन्तु जब हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल से पृथक् हो जाते हैं, अपनी स्थूलता को धारण करके मेरे प्यारे! देखो कहाँ, इस पृथ्वी माता की गोद में आ जाते हैं। ये नाना प्रकार का खाद्य व खनिज पदार्थ मानव को प्रदान करती रहती है। हे माता! वसुन्धरा पृथ्वी, तेरे गर्भस्थल में क्या वस्तु नहीं है। मानो वैज्ञानिक जब तेरे गर्भ में प्रवेश करते हैं तो नाना प्रकार का विज्ञान इसमें दृष्टिपात आने लगता है। जब मानो देखो, कृषक तेरे गर्भस्थल में यह बीज की स्थापना कर देते हैं तो तू नाना प्रकार के खाद्यान्न पदार्थों को प्रदान कर देती है। हे माता! तू कैसी भोली है, कैसी विचित्र है। मानो तेरे गर्भ में जब वैज्ञानिक प्रवेश करता है, तो नाना प्रकार की अग्नि के भण्डार तेरे समीप दृष्टिपात आने लगते हैं। वही अग्नि का भण्डार मानो विचित्र बन कर के नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण विज्ञानवेत्ता करता है।

तप की विवेचना

मैंने तुम्हें कई काल में मेरे पुत्रों! प्रगट करते हुए कहा था, क्या

संसार में जब मानव देखो, अपने जीवन में कुछ चिन्तन करने लगता है, मनन करने लगता है तो बेटा! नाना वस्तुओं की उपलब्धियाँ हो जाती हैं। जैसा पुरातन काल की, अतीत के काल की चर्चा करते हुए बेटा! हम तुम्हें वशिष्ठ और राम की चर्चा कर रहे हैं। बहुत समय हो गया है, राम और कृष्ण की चर्चाएँ मानो देखो हमारे साहित्यकारों ने बड़ी उल्लेखनीय अपनी लेखनीबद्ध की हैं परन्तु मैं राम और वशिष्ठ मुनि की चर्चा कर रहा हूँ। मैं उस आभा में जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु देखो जब भगवान् राम, मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम में, बेटा! तपों में, साधना में परणित होते रहते थे। मानो **प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुशासन करने का नाम तपोमय कहलाया जाता है।** जैसे बेटा! देखो, एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज से सोमकेतु ऋषि महाराज ने यह कहा था कि महाराज तप क्या है? प्रत्येक मानव तपस्या में परणित होना चाहता है। मेरी प्यारी माता यह चाहती है कि मैं तपस्वी बन जाऊँ। परन्तु देखो, तपों में क्या है? तप किसे कहते हैं? तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यह कहा तपो ब्रह्मा तपम् अरणम् ब्रह्मा। तपम् मुद्रम् विष्णु कुतम् तपा। वेद का आचार्य यह कहता है कि विष्णु बनना ही तप है। मानो देखो, ब्रह्म अग्नि बनना ही तप है। तो मेरे प्यारे! देखो वह विष्णु, ब्रह्म अग्नि कैसे बनेंगे। मेरे पुत्रों! देखो, नम्र और अपने अन्तर्हृदय में उस परमपिता परमात्मा को, अपनी इन्द्रियों को समेट करके, इसका साकल्य बनाना है अथवा उस साकल्य को बना कर के आहुति देना है। हमें देवताओं को अग्नि वर्तम् ब्रह्म वाचाः। **मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान अग्नि को अपना करके इस संसार सागर से पार होना है।** मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषि ने यह वाक्य प्रकट किया कि तपो ब्रह्म वाचाः तपो। मेरे प्यारे! आज के हमारे वेद के पठन पाठन में जहाँ माता वसुन्धरा का वर्णन, जहाँ मानो देखो और भी नाना प्रकार की विज्ञान की आभाओं में हम तुम्हें ले जा रहे थे, वहाँ मेरे पुत्रों! देखो आज मैं तुम्हें अपब्रह्म ब्रह्म वाहा, सम्भूति लोकाम्। मेरे प्यारे! मैं यह

चर्चा कर रहा था तुम्हें क्या मुनिवरों! देखो सम्भूति ब्रह्म लोकाम्। मेरे प्यारे! तपम् हृदयम् गच्छतम्।

मुनिवरों! देखो तप की विवेचना आ रही थी। तप मानव को करना चाहिए। मैं तप के ऊपर तुम्हें कई काल में अपने विचार व्यक्त हमने तुम्हें किए हैं। आज का विचार तपों में क्या कह रहा है? महर्षि, बेटा! मैं ऋषियों के आसन पर तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। नाना प्रकार की वार्त्ताएँ आती रहती हैं। परन्तु देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, जब बेटा! देखो न्योदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और वेद कह रहा था, तपम् ब्रह्मा, तपम् सूर्याणि गच्छतम्, तपम् वायु गच्छतम्, अग्नम् भग्नम् ब्रह्मलोकाम् तपाः। मेरे प्यारे! देखो, तप की विवेचना कि यह संसार सर्वत्र एक तपोमय माना गया है। प्रत्येक मानव को तप करना है। मेरे प्यारे! देखो, तप उसे कहते हैं जो मंसा, वाचाः, कर्मणा। मानो देखो, अपने किसी भी प्रकार से वो हीनता में न हो जाएँ। मेरे प्यारे! देखो वो तपोमय कहलाता है। मुझे स्मरण आता रहता है नाना वार्त्ताएँ, तपों की बहुत सी चर्चाएँ स्मरण आती रहती हैं। परन्तु देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! तप की विवेचना कर रहे थे। क्या यह पृथ्वी तपती रहती है। तो यह वसुन्धरा बनकर के नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को हमें प्रदान करती है। मेरी प्यारी माता मानो बाल्य ब्रह्मवर्चोसी से तपा करती है। तो मुनिवरों! देखो, वो ममतामयी बन जाती है। आचार्य, विद्यालय में ब्रह्मचारी तप रहा है परन्तु वह कुछ समय के पश्चात् कोई आचार्य बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक मानव तपायमान रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यह पृथ्वी तपा करती है तो नाना प्रकार के व्यञ्जनों का जन्म देती है। मेरे प्यारे! देखो चन्द्रमा क्या सूर्य तपायमान रहता है द्यौ उसे प्रकाश लेता है और यह सूर्य तपता रहता है, बेटा! प्रातःकाल से सायँकाल तक तपता रहता है तो यह तपायमान कहलाता है। तो मेरे प्यारे! तपम् तपम् तपत्त्राणम्, ब्रह्मलोकाम् तपम् हृदयानी गच्छतम् देवाः। मेरे प्यारे! इसलिए प्रत्येक

मानव को तपना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इसी चिन्तन में लग रहे थे कि मुझे तप करना है। ये तो संसार का प्रत्येक परमाणु तप रहा है। प्रत्येक प्राणी तप रहा है। मेरे पुत्रों! तपने के पश्चात् ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देती है। सृष्टि का वृहम् रूप बन कर के एक माधुर्यतम में परणित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इस प्रकार की विवेचना करने लगे तो मानो प्रातःकालीन हो गया।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की इच्छा

प्रातःकाल होते ही याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने विद्यालय में मानो देखो अग्निहोत्र किया और न्योदा में मन्त्रों का उद्गीत गाया। जब उद्गीत गाने लगे तो ब्रह्मचारीजन शिष्य संग विद्यमान थे। ब्रह्मचारियों ने कहा–हे प्रभु! आज तो आप बड़े ही आश्चर्य से वेदों का अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने कहा हाँ ब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी रोहणीकेतु ने कहा–प्रभु ऐसा क्यों? उन्होंने कहा–तपम् ब्रह्मे वाचाः। मेरे द्वारा तप की विवेचना आती रहती है। परन्तु मेरी इच्छा यह है ब्रह्मचारियों, क्या मैं तप करने चला जाऊँ। तो ब्रह्मचारी बोले क्या हे प्रभु! ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। जिस विद्यालय में तपे हुए आचार्य हों मानो वो विद्यालय तो सौभाग्यशली होता है। जिस गृह में माता-पिता तपस्वी होते हैं, वह गृह सौभाग्यशाली होता है। जिस राजा के राष्ट्र में राजा तपा हुआ होता है वो राजा, वो राष्ट्र सौभाग्यशाली होता है। हे प्रभु! आप तप करने जाइए क्योंकि यह संसार तपोमय है। ब्रह्मचारियों ने हर्षध्वनि की और यह कहा कि प्रभु ये हमारा बड़ा सौभाग्य है। हम मानो देखो, अपने में सौभाग्यशाली हैं।

मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह वाक्य कहा–सम्भवा लोकाम् हिरण्यम् मृथाहा, वाचन नमाम् ब्रह्मे लोकाम् वृत्ति देवाः। तो बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ब्रह्मचारियों की आज्ञा पाते ही विद्यालय को त्याग

दिया और वो भयङ्कर वन में पहुँचे। तो वन में जाने के पश्चात् एक वेद मन्त्र उन्हें स्मरण आ गया। और वह वेद मन्त्र कह रहा था—तपम् महाब्रह्मे वाचातपम् प्राणम् ब्रह्मे, तपो वृत्ति देवाः। वेद का मन्त्र यह कह रहा था क्या ये मन और प्राण का, दोनों का समन्वय होकर ही मन और प्राण को दोनों को प्रभावित करता है। इसीलिए कोई भी तुम्हारा सम्बन्धी हो और तुम तप करने के लिए जा रहे हो तो तुम उन्हें ज्ञान के द्वारा सन्तुष्ट करो। परन्तु देखो ये वाक्य याज्ञवल्क्य मुनि के विचार में आया। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम मैत्रेयी था और एक का नाम कात्यायनी था। मेरे पुत्रों! देखो वह यह विचारने लगे कि दोनों को सन्तुष्ट करना है, तप मेरा जभी मानो देखो फलीभूत होगा, जब मैं तप करूँगा।

कात्यायनी के उद्गार

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वहाँ से भ्रमण किया और मानो अपने गृह में पहुँचे। सबसे प्रथम वो कात्यायनी के स्थान में पहुँचे। कात्यायनी आश्चर्य से बोली प्रभु, आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? याज्ञवल्क्य मुनि बोले, देवी मैं आज तप करने जा रहा हूँ। मैं आज न्योदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहा था परन्तु उसमें तपोमयी हृदय की चर्चा आ रही थी तो मेरे अन्तरात्मा ने यह स्वीकार किया है कि मुझे तप करना चाहिए। तो देवी तुम्हारी क्या इच्छा है? तो कात्यायनी ने कहा—प्रभु, वाक्य तो यथार्थ है। ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। आप यदि तप करने जाएँगे जो हमारा बड़ा सौभाग्य है क्योंकि जिस पत्नी, जिस पत्नी का पति तपस्वी हो, सदाचारी हो, योगेश्वर हो, वह उस पत्नी का तो प्रभु बड़ा सौभाग्य है। हमारा बड़ा सौभाग्य है। आप तप करने जाइए। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बड़े आश्चर्य में बोले देवी तो मैं तप करने जा रहा हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम भगवन्, हम यहाँ तप करेंगे, आप जाइए तप करने।

मैत्रेयी को मधु विद्या का उपदेश

मेरे प्यारे! देखो, अब वो कात्यायनी को त्याग करके मैत्रेयी के समीप पहुँचे। मैत्रेयी ने उनका स्वागत किया। मैत्रेयी से ऋषि बोले, समभू ब्रह्म वाचाः। मानो मैत्रेयी ने कहा–प्रभु, सम्भवाम् लोकाम् तपवृह वृताम्। आप कहाँ से आए हैं? और बिना सूचना के गृह में आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा देवी, मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों! मैत्रेयी ने कहा, प्रभु, आप तप करने जा रहे हैं। मेरा क्या बनेगा, मैं आपकी पत्नी हूँ। मानो देखो, मेरा क्या बनेगा संसार में, यदि आप तप करने जाएँ। याज्ञवल्क्य बोले देवी तुम बड़े आश्चर्यमय उच्चारण कर रही हो। जिस समय मानो देखो मेरा तुम्हारा शास्त्रार्थ हुआ था और देखो ब्रह्मज्ञान में तुम्हारी इतनी ऊर्ध्वागति और आज तुम अज्ञानता की वार्त्ता प्रकट कर रही हो। ये बड़ा आश्चर्य है। उन्होंने कहा, नहीं भगवन्। उन्होंने कहा, देवी, तो सुनो, श्रवण करो, मानो तुम्हें यह प्रतीत है कि **जो भी इस संसार में कर्म करता है, वह अपने लिए किया करता है।** मानो देखो आज मैं तप करूँगा तो अपने लिए। तुम तपस्वी बनोगी, अपने लिए। तुम्हारा तप तुम्हारे आङ्गन में, तुम्हारे क्रियाकलापों में रत्त होता रहेगा। देवी, संसार में तुम्हें प्रतीत है कि पत्नी जो होती है वो पति तक सीमित रहती है। यदि वो अपने लिए पत्नी बन जाए तो उसका कल्याण हो जाए। पति पत्नी तक सीमित रहता है परन्तु यदि वो अपने लिए पति बन जाए तो उसका जीवन मानो सफल बन जाता है। जैसे माता का पुत्र है, वो माता तक सीमित है। माता के लिए पुत्र है यदि वो अपने लिए पुत्र बन जाए तो उसका कल्याण हो जाए। पुत्री पिता तक सीमित रहती है। पिता तक मानो वो पुत्री है यदि अपने लिए पुत्री बन जाए कि मैं पुत्री हूँ। मैं प्रभु की पुत्री हूँ। ये संसार प्रभु का रचाया हुआ है तो मानो उसका कल्याण हो जाए। हे देवी! तुम्हें प्रतीत है क्या ये जो वृत् है यह तो आत्मतृप्ति के लिए ही तो है। यदि वृतआत्म तृप्ति के लिए आत्मा की तृप्ति त्याग दी जाए तो वृत संज्ञा

समाप्त हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, क्योंकि मैत्रेयी बुद्धिमान थी, मैत्रेयी ने विचाराः सम्भवा लोकाम् हिरण्य मृथा। मानो देखो ये तो मेरे पूज्य पतिदेव तो महान् बुद्धिमान हैं। उन्होंने कहा, भगवन्! मेरा अज्ञान तो नष्ट हो गया है। मैं इस मधु विद्या को विशेष नही जानती हूँ। मैंने यह जान लिया है कि **जो भी मनुष्य कर्म करता है, वह अपनी आत्मतृप्ति के लिए करता है।** परन्तु यदि वह साधना में परणित हो गया है, साधना मे रत्त हो गया है तो वह भी, मानो उसको देखो आत्मा की तृप्ति के लिए है। मेरे प्यारे! मैत्रेयी ने कहा प्रभु आप तप करने जाइए।

मेरे प्यारे! देखो याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! मैं तुम्हारा दोनों का बँटवारा किए देता हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है द्रव्य के लिए? उन्होंने कहा प्रभु आप तप करने जाइए। हम स्वतः अपनी तपस्या और अपने माधुर्यतम में रहेंगे और हम स्वतः अपने द्रव्य का बँटवारा करें ना करें। आप तप करने जाइए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि का भयङ्कर वन में तप के लिए गमन

याज्ञवल्क्य मुनि ने दोनों पत्नियों को सन्तुष्ट करके, ब्रह्मज्ञान में परणित करके बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज भयङ्कर वन में जा पहुँचे। विचारने लगे ब्रह्मोरूपाम् मनोस्ततम्। ये जो मन है इसको कैसे पवित्र बनाया जाए। तपाम् ब्रह्मे लोकाम् ततस्तु सम्भव। विचारने लगे कि ये तप क्या है। मेरे प्यारे! तप के सम्बन्ध में विचारने लगा ऋषि। एक अन्तःस्थली पर विद्यमान है। छः माह हो गए, पत्र-पुष्पों का सेवन कर रहा है और यह विचार रहा है कि ये तप है क्या। मेरे प्यारे! बहुत समय के पश्चात् यह विचार में आया—अन्नादम् भूतम् ब्रह्म वाचो देवाः। ये वेद की आख्यायिका स्मरण आई और यह विचारा कि अन्न को पवित्र बनाना है। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने मानो देखो **मन को पवित्र बनाने का नाम तप कहा गया** और मन की उत्पत्ति के मूल कारण को उन्होंने विचारा क्या ये मानो ब्रह्मो ये मन कैसे पवित्र होगा। इन्द्रियों को कैसे

पवित्र बनाया जाए तो मन पवित्र होगा। मन की उत्पत्ति क्या है, तो ऋषि ने अध्ययन करते-करते यह विचारा कि अन्नादा भूत प्रवाहा। ये जो अन्न है इसी से मन की प्रतिभा का जन्म होता है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने मुनिवरों! देखो, उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं था। जिसको हमारे यहाँ शिलस्त अन्न कहा जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उस अन्न को उन्होंने एकत्रित किया। उस अन्न को पान करते थे और तपस्याइन्द्रोग्रहः। इन्द्रियों का निग्रह करने लगे। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, बारह वर्ष तक उन्होंने इस प्रकार का तप किया। बारह वर्ष हो गए उसी शिलस्त अन्न को पान करना, मन को पवित्र बनाना, इन्द्रियों का सहयोग बनाना और उसका साकल्य बना कर के याग करना।

शतपथ ब्राह्मण पोथी का निर्माण

बेटा! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! इस प्रकार के बारह वर्ष के तप के मध्यकालीन एक पोथी का निर्माण किया था। इस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। उस पोथी का निर्माण किया तो निर्माणवेत्ता ने प्रारम्भ के ही सूत्रों में उन्हें मानो देखो इस पोथी को सूत्रित किया है। तीन शब्द हैं बेटा! उसमें। मानो देखो, शतपथ ब्राह्मण में तीन ही शब्द हैं ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसी। मेरे प्यारे! देखो ये तीन शब्द और तीनों शब्दों की व्याख्या करने वाली बेटा! सर्वत्र पोथी उसी व्याख्या से ओत-प्रोत है। कैसे बेटा! मानो, तीन ही ये मनके हैं। हर एक सूत्र के मनके हैं। जैसे माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके होते हैं, ऐसे यह माला के तीन मनके कहलाते हैं पुत्रों, और वह मनके कैसे ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसी। मानो ये तीन शब्द हैं जो तीन मनके कहलाते हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं, एक-दूसरे में आभाहित हो रहे हैं। मानो देखो, वेद का ऋषि कहता है ब्राह्मण कौन है। प्रश्न किया गया। वेद की आख्यायिका कहती है–ब्रह्मो वाचा प्रभा कौनो दृष्टि। ये

ब्राह्मण कौन है? वो कहता है, ऋषि ने व्याख्या की क्या ब्रह्म जानना ही ब्राह्मण। जो ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है। जो प्रकृति के, इस संसार के कण-कण में उस ब्रह्म को दृष्टिपात करता है वही ब्राह्मण कहलाता है। वेद के ऋषि ने आगे कहा कि ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी वो है जो प्रत्येक श्वास की गति को ब्रह्म में पिरोने वाला होता है। ब्रह्म चरिष्यामि ब्रह्म कुत्रो सुताम् देवा। मेरे प्यारे! ब्रह्म में कौन? ब्रह्मचारी, ब्रह्म में मानो प्रत्येक श्वास को पिरो देता है। एक माला बना देता है। माला को धारण कर लेता है। जैसे बेटा! सूर्य मानो तीस लाख पृथ्वियों की माला बना कर के अपने में धारण कर रहा है। इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी प्रत्येक श्वास की एक माला बना कर के, मेरे पुत्रों! अपने में पिरो लेता है। अपने को ब्रह्म में पिरो लेता है और ब्रह्मवर्चोसी मानो ब्रह्म और चरी के दो ही शब्द कहलाते हैं जब मानो देखो ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा का है और चरी नाम प्रकृति का है। जो बह्म की चरी को चरने वाला है वही मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसी कहलाता है। क्या विचित्र वेद का मन्त्र कहता है बेटा! बह्मो चरिश्याम् ब्रह्मवाहा देवा। हे ब्रह्मचरिष्यामि तू मानो अपने में सूत्रित हो कर के अपनी आभा में रत्त होता चल। जिससे मानव तेरी मानवीयता पवित्रता में धारण हो जाए। हर पवित्र सूत्रों को अपने में धारण करके ही इस संसार की प्रतिभा में मानो देखो रत्त हो जाएँ।

आओ मेरे पुत्रों! वेद का ऋषि क्या कहता है। वेद का ऋषि कहता है ब्राह्मण, जो एक-एक कण-कण में ब्रह्म को जानने वाला है वही ब्राह्मण कहलाता है। और ब्रह्मचारी वो है जो अपने प्रत्येक श्वास को बेटा! देखो, ब्रह्म में पिरो देता है। मेरे प्यारे! ब्रह्मवर्चोसी उसे बोलते हैं जो ब्रह्म को अपने में चरने वाला है, वही तो आभा में युक्त रहने वाला है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष आभा में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। तुम्हें केवल कुछ परिचय कराने के लिए चला

आता हूँ। और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ये तीन शब्दों की व्याख्या वाली पोथी का निर्माण किया है। उन्होंने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन भी इसी में किया है। भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराओं में रत्त रहने वाला बेटा! अपने में ही अपने को पिरोने वाला है। तो आज का हमारा वेद मन्त्र, हमारा वेद का मन्त्र क्या कह रहा है? क्या मुनिवरों! देखो, तीनों जो मनके हैं वो सूत्र में पिरोये हुए हैं और वह सूत्र कौन है? वह सूत्र मानो, वह परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है। वही तो परमपिता परमात्मा में तीनों सूत्र बेटा! अपने में सूत्रित हो रहे हैं।

प्रभु से याचना

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार ये क्या कह रहा है? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो देखो, उस ब्रह्म को जो मानो देखो, माता वसुन्धरा के रूप में हमें दृष्टिपात आता है। हे ममताम ब्रह्मलोकाम, हे माता! तू वसुन्धरा है और तू वसुन्धरा बन कर के तू हमारा कल्याण कर रही है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में तीनों सूत्र पिरोये हुए हैं। मानो उसी को पिरोना, उसी को अपना हमें सूत्र बनाना है जिस सूत्र को धारण कर के, हमारे जीवन की प्रतिभा महान् बन कर के इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्य हमारा क्या कह रहा है। बेटा! हम वसुन्धरा की याचना कर रहे हैं। तपो हिरण्ममृथा, मुनिवरों! देखो तप से ही उस परमपिता परमात्मा की गोद में जाना है। **तपों में रहना ही बेटा! ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धियों का होना है।** और वही मुनिवरों! देखो, माता वसुन्धरा की गोद में हम अपने को स्वीकार करें। हे माता! वसुन्धरा, प्रत्येक वेद मन्त्र बेटा! उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। बेटा! ये पृथ्वी, जब भी किसी वैज्ञानिकों ने बेटा! इस पृथ्वी के परमाणुओं को जाना है तो वह विज्ञानवेत्ता बन गया है। वह मानो देखो, इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश होकर के इसे

ममत्व रूप अपने में धारण कराती है। मानो देखो, यह वसुन्धरा बन कर के हमारा कल्याण करने वाली है। हमें महान्ता की वेदी पर ले जाने वाली है। जिसे मानो देखो, हमारी मानवीयत्व का कल्याण होता है। आभा में निहीत होते रहते हैं। तो यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, क्या हम मुनिवरों! देखो, उस माता वसुन्धरा की याचना करते चले जाएँ जो माता, जिसके द्वारा उस मन से हमारा कल्याण होता है। हम विज्ञान और ज्ञान में रत्त हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो मैं माता वसुन्धरा जो हमारे वैदिक साहित्य में वसुन्धरा नाम प्रभु का है, वसुन्धरा नाम माता का है, वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है। मानो देखो, ये वसुन्धरा जो हमें बसाती है, उसी का नाम वसुन्धरा कहलाता है। हे माँ वसुन्धरा, तू हमारा कल्याण कर। हम मानो देखो, तुझे बारम्बार नतमस्तक हो कर के तेरे ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में हम सदैव रत्त हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः यम सनागायन त्वा नाम ऋषि वर्णाः आपयाम् लोकम् सर्वाः।
ओ३म् जनिताः वाचन्न गाताः रथम् ब्रह्म वाचाः।
ओ३म् मधु मन्था ओ३म् ऋषि वाचन्न गाताः। ओ३म् ब्रह्मणाः देवम् मयाः शरणम् भद्राः।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द मंगलाचार! शान्तिः।

दिनाँक : 1 नवम्बर, 1985
समय : रात्रि 9 बजे
स्थान : भगत साधूराम,
ग्राम चौरा

॥ ओ३म् ॥

यागमयी जीवन

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं। मानो वो आत्मवत् हैं, वह आत्मामयी स्वरूप हैं। जितना भी ज्ञान और विज्ञान है चाहे वह भौतिकवाद में है चाहे वह अध्यात्मिकवाद में है, परन्तु वह परमपिता का वो सर्वत्र एक आयतन माना गया है क्योंकि यह ब्रह्माण्ड ही उसका आयतन है। जितना भी परमाणु और अणु हमारे वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में नृत करता रहा है मानो वह परमाणु ही उसका आयतन है, वह उसका गृह है। तो इसलिए जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मेरा प्यारा प्रभु कितना अनुपम है—मानो वो श्रोत्रिय माना गया है जिसके ऊपर परम्परागतों से ही मानव अपने में अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान में हम रत्त हो जाएँ। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए हैं परन्तु कुछ अध्यात्मिक रूप में हैं और कुछ मानो भौतिक वैज्ञानिक रूपों में हैं परन्तु आज तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। वह मेरा देव सीमा से रहित है। उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त है क्या मुनिवरों! देखो वह कोई भी मानव सीमा में उसको नहीं ला सकता।

प्रेरणा का स्त्रोत

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है, वेद मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। जिस भी वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं तो वही वेद मन्त्र बेटा! प्रेरणादायक है, वह प्रेरणा का स्त्रोत है। इसलिए प्रत्येक मानव अपने में अनुसन्धान करने वाला उस प्रत्येक आभा से बेटा! वह प्रेरणा लेता रहता है। **यहाँ प्रत्येक वायु की तरङ्गें भी मानव को प्रेरणा देती रहती हैं।** मानव का एक-एक विचार मानव को प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है। तो इसलिए मानव को चाहिए क्या वह मानव जो इस ब्रह्माण्ड की रचना और एक-एक वेद के शब्दों से अपने में प्रेरणादायक बने और उस प्रेरणा को अपना प्रेरणावृत्तियों में बना करके अपने जीवन को उसके अनुसार धारण कर लेना चाहिए। आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष विवेचना में नहीं ले जा रहा हूँ। आज मैं तुम्हें ये उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है? इससे पूर्व काल में हम कुछ मानो मृत्यु की चर्चा कर रहे थे। प्रत्येक मानव याग के द्वारा मृत्यु चाहता है। मानव जो भी क्रियाकलाप कर रहा है उस क्रियाकलाप के पिछले भाग में अथवा उसके अन्तिम चरण में बेटा! एक मानव जीवन का एक स्त्रोत है और प्रत्येक मानव की आकांक्षाम् आकांक्षा रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। परन्तु जब इस वाक्य पर हम जाते हैं तो बेटा! इससे पूर्व के काल में हमने ये वर्णन कराया क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं वह अन्धकार है। वह मानो देखो रात्रि है, वह अपने में निष्क्रिय है। तो उसका अभाव नहीं, उसका भावाम् भविच ब्रह्मा मानो देखो उसका अस्तित्व नहीं है।

आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा केवल ये वाक्य प्रगट करना है कि मृत्यु के सम्बन्ध में, आज मुझे बेटा! वह काल पुनः से स्मरण आ रहा है। मैं कालों को सदैव बेटा! हमारे नवीनता को प्राप्त होते रहते हैं। वास्तव में संसार में

नवीन कोई वस्तु नहीं हैं संसार में, परन्तु उसकी पुनरुक्तियाँ करने से उसकी प्रतिभा मानो स्मरण शक्ति पुनः से जागरूक हो जाती है। तो संसार में कोई वस्तु नवीन नहीं है क्योंकि वह सदैव एक रस रहने वाली है क्योंकि प्रभु का जितना भी ज्ञान और विज्ञान है अथवा प्रभु का जितना भी अमूल्य जगत है चाहे बेटा! ये पृथ्वी मण्डल हो, चाहे मङ्गल हो या और भी नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर क्यों न हो परन्तु उन सबमें एक रसता होती है वह कोई नवीन नहीं हैं। एक वैज्ञानिक कहता है कि मैंने सूर्य मण्डल की अमुख किरणों को जाना है तो मानो वो कोई नवीन वाक्य नहीं है। किसी काल में वैज्ञानिक ने सूर्य की किरणों को जाना होगा आज भी मानव जानता रहता है क्योंकि मस्तिष्क तो मानो एक ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म-सा एक स्वरूप माना गया है जिसके ऊपर मानव के इस ब्रह्मरन्ध्र में, इस मानवीय मस्तिष्क में बेटा! देखो परमाणुओं का आदान-प्रदान होता रहता है और उस परमाणुओं के आदान-प्रदान से ही मुनिवरों! देखो उसके अनुपम विचार बनते रहते हैं, अनुपम धाराएँ बनती रहती हैं। उन धाराओं के अनुसार ही मेरे पुत्रों! देखो अपने जीवन को वह निर्धारित कर लेता है अथवा विज्ञान में वह रत्त भी हो जाता है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ परन्तु विचार केवल ये कि संसार में कोई वस्तु नवीन नहीं हैं और न उसमें वृद्धपन आता है। न कोई वस्तु वृद्धपन में है, न कोई नवीनतम में है वह सदैव एक रस रहने वाली है। इसलिए **प्रत्येक प्राणी को, मानव को एक रस रह करके बेटा! अपने प्रभु का चिन्तन करना चाहिए।** एक रस, क्योंकि वह देव है वह अपने में स्वरूप है उस स्वरूप को अपने में बेटा! देखो अपनी धाराओं में रत्त कर लेना चाहिए।

महर्षि काग्भुषण्ड जी व महर्षि लोमश जी महाराज का चिन्तन

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु वेद मन्त्र क्या कहता है। आज मैं वेदों की प्रतिभा में

तुम्हें ले जा रहा हूँ। मेरे प्यारे देखो मुझे स्मरण आता रहता है वो मानो ऋषि-मुनियों का काल जहाँ काग्भुषण्ड जी की चर्चाएँ और महर्षि लोमश मुनि की चर्चाएँ आती रहती हैं। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है एक समय मानो देखो न्योदा में से मन्त्र मेरे पुत्रों! देखो उच्चारण कर रहे थे, कौन? महर्षि काग्भुषण्ड जी, और काग्भुषण्ड जी और लोमश मुनि जी दोनों की विवेचना होती रहती थी। तो वेद मन्त्र में आया ''विष्णुविश्नसचम् ब्रह्म वाचस्व यागाम् भविते मृत्युञ्जम् ब्रह्म वाचस्व कृतिलोका'' बेटा! वेद का वाक्य कहता है क्या प्रत्येक मानव अपने में धी स्थिति बनता रहता है परन्तु वेद की धारा ये कहती है क्या यजमान क्या मानो देखो मृत्यु याग से, मृत्यु को मानो पार कर जाता है, मृत्यु से पार हो जाता है। मृत्यु से पार होना ही मुनिवरों! देखो यागों का चलन होता है। जब मानव ब्रह्म याग में परणित होता है ब्रह्म की चर्चाएँ होती हैं और उन चर्चाओं को धारण कर लेता है इन्द्रियाँ उन विचारों से सजातीय बन जाती हैं। तो इन्द्रियाँ बेटा! देखो तो वह व्यापकवाद में क्या वह व्यष्टि से समष्टि को प्राप्त हो जाती हैं और प्राप्त हो करके बेटा! उनका विशाल स्वरूप मानव के समीप आता रहता है। तो बेटा! काग्भुषण्ड जी को ये वेद मन्त्र स्मरण आया और वेद मन्त्र न्योदा में से उच्चारण किया और महर्षि लोमश से कहा कि महाराज ये वेद मन्त्र कहता है कि याग से मानव मृत्यु को उलाङ्घ जाता है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम के लिए गमन

आओ भगवन् आज हम मृत्यु से उलाङ्घने के लिए कोई विचार बनाएँ, तपस्वी बने। परन्तु ये वेद मन्त्र जैसा कहता है। मेरे प्यारे! देखो महर्षि लोमश मुनि ने कहा क्या हे भगवन्! मेरे विचार में तो ये आता है आज महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम में गमन करते हैं और वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ विद्यालय में नाना ब्रह्मचारी प्रातःकालीन मानो देखो यागों का चलन होता है। नाना प्रकार की विचारधाराएँ बुद्धिमानों की उनके

समीप आती रहती हैं और उनके द्वार पर हम अपने को पहुँचाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि काग्भुषण्ड, महर्षि लोमश बेटा! दोनों ने अपने आसन से प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! वह महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के विद्यालय में जा पहुँचे जहाँ बेटा! ब्रह्म की चर्चाएँ होती रहती थीं। क्योंकि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज प्रायः बेटा! ब्रह्मवेत्ता थे और ब्रह्मवेत्ता का जीवन क्योंकि परब्रह्म परमात्मा उस ब्रह्म से सजातीय होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो वह वहाँ से भ्रमण करते हुए, गमन करते हुए वह प्रातःकाल का समय था। प्रातःकालीन ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं और ब्रह्मचारियों की पंक्ति में मेरे पुत्रों! देखो वह ऋषि मुनि अपने में आभा को प्रगट करने के लिए तत्पर थे, मानो वहाँ याग हो रहा था। तो मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारियों के प्रश्न उत्तर हो रहे थे। तो मुनिवरों! देखो जैसे वेद का मन्त्र उच्चारण हुआ और वेद आरम्भ मानो याग का प्रारम्भ हुआ तो कुछ वेद में बेटा! देखो उसमें ऐसा विष्णु शब्द का उच्चारण किया जा रहा था। तो मेरे पुत्रों! देखो भगवान् राम बाल्यकालीन मानो देखो ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। तो राम ने ये प्रश्न किया क्योंकि माता अरुन्धती याग में विद्यमान थीं। क्योंकि माता अरुन्धती का जीवन तपोमय था मानो वह अपने में दर्शनों में अपने जीवन को प्रायः ले जाती रहती थीं। सदैव मानो देखो योगा अपने में योगाभ्यास प्राण का निरोध करना वह मातेश्वरी जानती थी। देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की भी प्रायः चर्चा होती रहती थी। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज तो केवल ब्रह्म की चर्चाओं में रत्त रहते थे। ब्रह्मचारियों को ब्रह्म की विवेचना प्रगट करते रहते थे।

माता अरुन्धती और भगवान् राम के प्रश्नोत्तर

देखो, ऐसा ही ब्रह्मवाचम् ब्रह्म वाहा श्रुति मानो देखो भगवान् राम ने माता अरुन्धती से एक ये प्रश्न किया क्या हे मातेश्वरी! आज हम याग कर रहे हैं और वेद मन्त्र का अध्ययन मानो देखो उसका पठन-पाठन किया

तो उसमें क्या आ रहा था विष्णु वाचम् ब्रह्मा आत्मा दिव्यम् भविते देवाम्। हे प्रभु! हे मातेश्वरी! ये वेद मन्त्र ये कहता है कि **आत्मा विष्णु है,** आत्मा मैं विष्णु को कैसे स्वीकार करूँ? क्योंकि मुझे वास्तव में महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने नाना प्रकार के वाक्यों को उद्बुद्ध किया आज भी मानो मुझे वो वाक्य पुनः से स्मरण हैं। मैं आत्मा को कैसे विष्णु स्वीकार करूँ। तो मेरे प्यारे! माता अरुन्धती ने कहा कि आत्मा तो विष्णु ही है। आत्मा तो मानो जहाँ विष्णु है वहाँ याग है, जहाँ याग है वहाँ परमपिता परमात्मा है, जहाँ मानो परमपिता परमात्मा है वहाँ मुनिवरों! देखो सतोगुण को भी विष्णु कहा जाता है। जहाँ सतोगुण की प्रतिभा आती है वहाँ माता का नाम भी विष्णु ही प्रतिपादन किया गया है। मानो प्रतिपादित करने वालों ने अपने में कहा है कि आत्मा विष्णु, आत्मा क्या माता का नामोकरण भी विष्णु है। राजन् नमम् ब्रह्मा विष्णु वेद की आख्यायिका कहती है कि राजा का नाम भी विष्णु है। तो मेरे प्यारे! देखो जहाँ राजा का नामोकरण विष्णु वहाँ सूर्य का नाम भी विष्णु आता है। यहाँ तो बेटा! जब विष्णु की विवेचना आएँगी तो एक ब्रह्माण्ड हमारे समीप आता रहेगा क्या विष्णु के कितने पर्यायवाची शब्द हैं। परन्तु एक ही वाक्य है इनके गर्भ में, इनके पिछले विभाग में एक ही शब्द है बेटा! पालन करना, **जो पालन करता है वही विष्णु है।** तो मेरे प्यारे! देखो भगवान् राम ने जब ये माता अरुन्धती से कहा था। अरुन्धती ने कहा हे पुत्रोंभाः मानो देखो पालन करने वाले का नाम विष्णु है इसलिए आज तुम विष्णु की विवेचना को जानना क्या चाहते हो? उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! प्रातःकालीन जब ब्रह्मचारीजन याग का क्रियाकलाप करते हैं तो यागों में आता है कि आत्मा का नामोकरण विष्णु हैं तो हम तो आत्मा को जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा जब तक शरीर में रहता है चेतना बनी रहती है, और वह चेतना मानो देखो आप अपने में क्रियाकलापों में परणित रहती है और वह जब क्रियाकलापों में रहती है तो मानो वही नम्र और प्रकाशों में से वह विष्णु कहलाता है। वह विष्णु है परन्तु देखो यह आत्मा ये अपने

में योगाभ्यास प्राण का निरोध करने वाला जो योगेश्वर होता है वह आत्मा को बेटा! विष्णु के रूप में मानो स्वीकार करता है।

मेरे पुत्रों! देखो, जब माता अरुन्धती से यह उत्तर उन्हें प्राप्त हुआ राम ने कहा कि माता ये मैंने स्वीकार कर लिया है परन्तु मैं ये जानना चाहता हूँ, क्या स्मभूतम् ब्रह्मा विष्णु ब्रव्हे वाचाः क्या वेद का वाक्य ये कहता है क्या मानव, **मानव मृत्यु को प्राप्त होने के लिए विष्णु की उपासना करता है** तो ये कैसे हम स्वीकार करें? उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी मानो देखो विष्णु अप्रतम् ब्रह्म वाचाः ब्रहे उपासना, **उपासना का अभिप्राय ये है कि जो वस्तु जिस रूप में है उसको उसी प्रकार हमें स्वीकार करना है और उसको उसी प्रकार स्वीकार करके वही उसका पूजन कहलाया गया है।** पूजन का अभिप्रायः ये है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहें और देखो जहाँ हम परमात्मा की उपासना करते हुए उसको अपना उपास्य देव हम स्वीकार करते हुए अपने में महान् बन करके बेटा! देखो अपनी प्रतिभा को ऊँचा बनाएँ और वही मृत्युञ्जय बन जाता है। तो मृत्यु से उलाङ्घना है हमें मानो देखो अन्तरयागी याग कर रहे हैं और इस याग में आता है मानव को मृत्यु से पार होना है। मानो देखो यागाम् भविते ब्रह्मचरिष्यामि। हे ब्रह्मचारी! मानो देखो एक ये जो याग है **ये मानव को मृत्यु से पार ले जाता है।** ये कैसे ले जाता है तुमने श्रवण किया होगा, तुमने जाना होगा। जब विद्यालय में तुम प्रवेश हुए तो तुम्हें यही शिक्षा दी गई क्या मृत्युञ्जय बनना है। हे ब्रह्मचरिष्यामि! ब्रह्मचरिष्यामि को अपनाना है, ब्रह्मचरिष्यामि को अपनाने वाला बेटा! मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है। ब्रह्म और चरी दो ही शब्द हैं जो मैंने बहुत पुरातन में तुम्हें विवेचना दी है। ब्रह्म और चरी दो ही तो शब्द हैं बेटा! देखो ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को, और चरी कहते हैं प्रकृति को। मानो देखो ब्रह्मचरिष्यामि जब ब्रह्मचारी विद्यालय में प्रवेश करता है, विद्यालय में याग करता है तो मानो वो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है और ब्रह्मचरिष्यामि कैसे बनता है मानो देखो ब्रह्म को अपना करके चरी को

उसमें सम्बोधित करता रहता है। बेटा! देखो ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को जो संसार का नियन्ता है, जो चेतना है। जो मानो देखो उसमें सर्वोपरि रूपों में रत्त रहने वाला है और मुनिवरों! देखो वह जो चरी है वह चरी ही प्रकृति है जो मानो ये दृष्टिपात आने वाला जितना जगत है यह सब चरी कहलाता है और इस मानो संसार को जो ये क्रिया में दृष्टिपात आ रहा है ये सब मानो देखो ब्रह्म की प्रतिभा कहलाती है। यही तो प्रतिभा ही मानो देखो मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो वही ब्रह्मचारी है अमृतम् मानो देखो तुम अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बन करके और स्वाहा भविते ब्रह्मा याग को अपने क्रियाकलाप में लाना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो जैसे बाह्य जगत में याग होता है ऐसा आन्तरिक जगत में याग हो रहा है उन दोनों यागों को हम जानने के लिए सदैव तत्पर रहें और दोनों प्रकार के यागों को जानने वाला प्राणी ही मुनिवरों! देखो इस संसार से पार होता है।

बेटा! चरिष्यामि प्रत्येक मानव ब्रह्मचारी बनना चाहता है। प्रत्येक मानव के हृदय में ब्रह्मचरिष्यामि की उत्कट इच्छा बनी रहती है परन्तु ब्रह्मचारी वह बनता है जो बेटा! प्रत्येक श्वास को बेटा! देखो उस चेतना में, उस ब्रह्म सूत्र में बेटा! अपने को पिरो देता है। बेटा! इसलिए मानव जो ब्रह्मचारी बनता है, वो पुत्री ब्रह्मचारिणी बनती है जो मानो देखो प्रत्येक श्वास को बेटा! मानो देखो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है और ब्रह्मसूत्र में पिरो करके एक-एक श्वास मानो देखो एक माला के सदृश बन जाता है। जैसे माला में धागा सूत्र होता है और नाना प्रकार के मनके होते हैं, तो मनके जब सूत्र में पिराए जाते हैं तो बेटा! वो मानो देखो वह जो सूत्र रहता है वह मनके रहते हैं मेरे पुत्रों! वह माला बन जाती है और वह माला को कौन धारण करता है वह ब्रह्मचारी उस माला को धारण करता है। मेरे प्यारे! देखो जब उसको ब्रह्मचारी धारण करता है तो वह ब्रह्मचरिष्यामि बनता है उस काल में।

माता अरुन्धती द्वारा जीवन मृत्यु की विवेचना

मेरे पुत्रों! देखो जब माता अरुन्धती ने ब्रह्मचारियों को ये उत्तर दिया तो इतने में बेटा! काग्भुषण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि भी भ्रमण करते हुए मानो देखो विद्यालय में आ पहुँचे और विद्यालय में जब बेटा! देखो माता अरुन्धती, ब्रह्मचारियों ने महापुरुषों को आते हुए दृष्टिपात किया तो बेटा! देखो सब नतमस्तिष्क हुए, और नतमस्तिष्क हो करके अपने स्थान पर वह विद्यमान हो गए। विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो ब्रहे माता अरुन्धती ने कहा कहो भगवन् आपका ऋषि आगमन कैसे हुआ? तो मेरे प्यारे! देखो तो काग्भुषण्ड जी ने कहा हे देवी! हम आज प्रातःकालीन अपने में मानो देखो मध्यकालीन में भी, प्रातःकालीन में भी हम मानो देखो कुछ न्योदा में मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे। न्योदा में मन्त्रों के उच्चारण में ये आया हमने श्रवण किया कि याग से यजमान मानो देखो मृत्यु को प्राप्त नहीं हो करके वह विजेता का रूप बनता है, वह मृत्यु को विजय कर लेता है। तो हे मातेश्वरी! हम जानना चाहते हैं कि मृत्यु क्या है? और जिस मृत्यु को उलाङ्घ गया है यजमान वह जीवन क्या? तो मेरे प्यारे! देखो माता अरुन्धती ने जब ये श्रवण किया तो काग्भुषण्ड जी से कहा हे भगवन्! ये जो मानव देखो अप्रतम् मृत्यु को उलाङ्घना चाहता है, मृत्यु क्या है? मृत्यु एक अज्ञान है, एक अन्धकार है, मानो देखो उलाङ्घना क्या चाहता है वह अन्धकार को उलाङ्घना चाहता है, प्रकाश में जाना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो न्योदा में से एक मन्त्र का उच्चारण मानो महर्षि लोमश मुनि ने किया और उन्होंने कहा मृत्यु अभावा अभावम् व्रही व्रताम् कृतिम लोकाम् भवे व्रताः वेद का वाक्य कहता है क्या मृत्यु जब अन्धकार है अपने में कोई उसका अस्तित्व नहीं है तो मृत्यु को उलाङ्घना वह उलाङ्घगा कौन-सी वस्तु? तो मेरे प्यारे! देखो माता अरुन्धती ने कहा क्या वह जो उलाङ्घना चाहता है वह मानो देखो अपने सङ्कीर्णवाद को उलाङ्घना चाहता है। जब मानव में सङ्कीर्णता आ जाती है तो वह सङ्कीर्णता सूक्ष्मवत् बन जाती है परन्तु जब वह सङ्कीर्णता विनाशता

को प्राप्त हो गयी मानो देखो उसका अस्तित्व नहीं रहता तो व्यापक हृदय बन जाता है वह हृदय की विशालता है। हृदय में ही मेरे प्यारे! देखो मानव संसार को अपने में वशीभूत कर लेता है और वह संसार जब अपने हृदय में प्रवेश कर जाता है तो बेटा! हृदय विशाल बन करके सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो हृदय की अच्युता मानो देखो उसी में प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो माता अरुन्धती के इस उत्तर को पान करते हुए ऋषि ने हर्षध्वनि अपने में की। उन्होंने कहा वाक्य तो तुम्हारा यथार्थ है परन्तु जीवन क्या है जिसको मानव ये जानना चाहता है, जिस जीवन में प्रवेश होना चाहता है वो जीवन क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा, माता अरुन्धती ने कहा कि वह जीवन क्या है? मानो वह जो जीवन जिसकी तुम कल्पना कर रहे हो या जिसकी हम कल्पना करते हुए वह जीवन क्या है? मानो देखो **जीवन वह कहलाता है जो जिसके कारण से पञ्च महाभौतिक पिण्ड अपने में गति कर रहे हैं।** अपने में पञ्च महा देखो पञ्च महा जो वृत्तियों में गति कर रहे हैं वह पिण्ड के रूप में परणित हो गए हैं। और उस पिण्ड में जो जीवन शक्ति है मानो वह जो क्रिया है वह जो पञ्च महाभौतिक जो विज्ञान है जिसे हम भौतिकवाद भी कहते हैं। मानो देखो भौतिकवाद में जो एक-एक परमाणु अणु परमाणु एक-दूसरे से समन्वय हो करके और मानो देखो वैज्ञानिक बना रहा है, हमें जीवन सत्ता को दे रहा है। मानो देखो हमें इस संसार का सङ्कीर्णवाद और अन्धकार हमारे समीप अज्ञान जब नहीं रहता तो मानो देखो उस काल में एक जीवन प्रतिभा हमारे समीप आ जाती है और वह जो जीवन प्रतिभा है वही तो मानो देखो आत्म-चेतना का एक अनुपम स्त्रोत कहलाता है, वही तो आत्मा का स्त्रोत है। मेरे प्यारे! देखो आत्मा का वह जीवन अश्वस्थ है उस पर विद्यमान हो करके अश्वस्थ हो करके मेरे पुत्रों! देखो जैसे राजा अश्वमेध याग करने वाला राजा मानो देखो अश्वमेध याग में घोड़ा मानो अश्व को त्यागा जाता है और अश्व मानो सर्वत्र राष्ट्रों में वह भ्रमण करता है तो राजा को जब यह प्रतीत हो जाता है कि तुम्हारा अश्व

तुम्हारे समीप आ गया, राष्ट्र में आ गया तो उस काल में राजा हर्ष ध्वनि करता है और वह याग करता है, क्रियाकलाप करता है यागाम् ब्रह्मवाचाः मानो देखो अश्वमेध याग करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। वह मानो प्रजा के जीवन को चाहता है राजा, अपने राष्ट्र में मानो देखो दूषित वायु मण्डल को समाप्त करना चाहता है। इसी प्रकार हे ऋषिवर! मेरे विचार में तो ये भी आ रहा है क्या मानो वो जो जीवन शक्ति है वह एक अश्व है आत्मा उसके ऊपर विश्राम करती हुई मानो देखो इस लोक-लोकान्तरों में क्या वह ज्ञान के कुञ्ज में प्रवेश कर जाती है और ज्ञान और विज्ञान के कुञ्ज में जब प्रवेश करती है तो संसार मानो देखो खिलवाड़ हो करके वह अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो जब माता अरुन्धती ने ये वाक्य कहा तो जीवन शक्ति का उन्हें निराकरण हुआ। मानो ये वाक्य उन्होंने स्वीकार कर लिया क्या मानव को जीवन सत्ता को प्राप्त करना चाहिए वह ऊर्ज्वा है वह मानो एक सत्ता है। जो मुनिवरों! देखो लोक-लोकान्तर जिसमें पिराए हुए हैं। आज जब ये विचारा जाता है–हम जब सङ्गतिकरण के सम्बन्ध में विचारने लगते हैं एक-दूसरे से कैसा एक मानव का क्या एक प्राणी का क्या एक मानव देखो अणु और परमाणुओं का एक-दूसरे से समावेश हो रहा है, एक-दूसरे से संङ्गतिकरण हो रहा है। उसी सङ्गतिकरण के आधार पर मेरे पुत्रों! देखो अप्रतियाँ बनती रहती हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! महर्षि काग्भुषण्ड जी ने मानो देखो एक अरणाब्रही वाचक एक परमाणु को उन्होंने कहीं से प्राप्त किया और उस परमाणु का जब विभाजन किया गया तो बेटा! जब विभाजन किया गया उन परमाणुओं का तो जितना ये ब्रह्माण्ड है मानो ये ब्रह्माण्ड जितना दृष्टिपात आता है या ये परोक्ष रूप में भी है बेटा! इस परमाणु के विभाजन करने से जब सूक्ष्म यन्त्रों से जब मुनिवरों! देखो इस परमाणु से मानो उसके गर्भ में क्या था तो बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आता रहता था। तो विचार क्या मानो ये

परमपिता परमात्मा का एक सङ्गतिकरण है क्या एक-एक परमाणुवाद में ब्रह्माण्ड है। मानो एक ओजस्वता है, एक ऊर्ज्वा है और वह ऊर्ज्वा मुनिवरों! देखो प्रत्येक श्वास के साथ में मानव देखो उसको अपने में धारण करता रहता है। उसी श्वास को जब वह ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है, वह पवित्र बन जाता है, वह महान् बन जाता है। मानो वही परमाणु जब मुनिवरों! देखो वह आवागमन लगा हुआ है उन परमाणुओं का, बेटा! देखो बाह्य जगत से नाना परमाणु आ रहे हैं आन्तरिक जगत से नाना परमाणु बाह्य जगत में गति कर रहे हैं मानो प्रत्येक श्वास पर श्वास अपनी गति कर रहा है, एक-एक शब्द अपने में शब्दायमान हो रहा है, वह ध्वनित हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो वही ध्वनितता मेरे पुत्रों! देखो अपनी आभा में दृष्टिपात आ रही है। तो विचार-विनिमय क्या? मेरा विचार, बेटा! कोई बहुत गम्भीर क्षेत्र में नहीं ले गया हूँ **विचार केवल ये है क्या मानव का जब अपना सूक्ष्मत्तम चिन्तन करने का एक माध्यम बन जाता है तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है** वह महान् और पवित्र बन करके वह अपने प्रत्येक श्वास को बेटा! ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है वह प्रकृति के ज्ञान और विज्ञान को अपने में रत्त करके बेटा! उसको नीचे दबा करके जैसे अश्व मानो देखो अश्व पर सवार हो करके गति करता है जैसे ये शब्द अग्नि की तरङ्गों पर विद्यमान हो करके सवार हो करके और मुनिवरों! देखो वह वायु की गति के साथ में बेटा! गतिशील बन जाता है। वह मानो देखो अन्तरिक्ष में उसकी स्थिति हो जाती है। तो विचार-विनिमय क्या मैं विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ विचार ये प्रगट कर रहा हूँ कि मानव बिना ज्ञान के बेटा! देखो बिना ज्ञान के और साधना के मेरे पुत्रों! देखो प्राण तत्व को जाने बिना मानव मृत्यु को प्रारब्रहे मृत्यु को उलाङ्घ नहीं सकता क्योंकि उलाङ्घना क्या है बेटा! देखो इस अज्ञान को, इस संसार को जो ममत्त्व में अपने में धारण किए हुए है इससे हम पार नहीं हो सकते क्योंकि हमें व्यापिक बनना है,

व्यापकवाद में अपने को ले जाना है। तो मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ दूरी न चला जाऊँ। विचार क्या चल रहा था मुनिवरों! देखो महर्षि काग्भुषण्ड जी ने माता अरुन्धती से ये प्रश्न किया था क्या हम अपने में मानो देखो यजमान जीवन को चाहता है तो जीवन क्या है? **व्यापकवाद का नाम जीवन है, सङ्कीर्णता का नाम बेटा! देखो अन्धकार है,** अश्व है, स्वति है, अन्धकार है बेटा! देखो उसी में मानव रत्त रहता है। मेरे प्यारे! देखो ये दोनों वाक्यों का उन्होंने निराकरण किया, निराकरण करके जब माता अरुन्धती मौन हो गयी।

विद्यालय में अध्ययन शैली

मौन हो जाने के पश्चात् काग्भुषण्ड जी ने पुनः एक प्रश्न किया क्या हे महदेवी! हम यह जानना और चाहते हैं क्या तुम्हारे विद्यालय में जो ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं उनकी अध्ययन की प्रतिक्रिया क्या है? माता अरुन्धती ने कहा कि इनके अध्ययन की प्रतिक्रियाएँ हैं क्या मानव, मानव का सबसे प्रथम अध्ययन करता है क्योंकि अध्ययन करने से मौलिकता में उसके गर्भ में ये है कि एक ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है, अध्ययन करता हुआ अपना सबसे प्रथम अपना अध्ययन करता है। **अपना अध्ययन क्या है?** मेरे प्यारे! देखो ये जो शरीर रूपी याग हो रहा है। ये जो शरीररूपी याग हो रहा है ये बेटा! शरीराम् भविते ब्रह्मा वेद का वाक्य कहता है क्या ये जो मानव का शरीर है ये परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने, सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! एक शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया था और ये शरीर रूपी यज्ञशाला है बेटा! देखो जिसमें नाना प्रकार की कृतिकाएँ रत्त होती रहती हैं जैसा महर्षि याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मचारियों को ये निर्णय कराया था कि ये शरीर एक यज्ञशाला है। मानो देखो यज्ञशाला में कितने होता हैं, कितनी प्रतिक्रियाएँ हैं? तो मेरे प्यारे! देखो ये प्रश्न माता अरुन्धती के समीप भी आया, तो माता अरुन्धती ने एक ब्रह्मचारी को उपस्थित किया–

भगवान् राम मानो देखो अयोध्या, अयोध्या से सम्भवा ब्रह्मे प्रश्नों का उत्तर दीजिए। ऋषि क्या कहता है मानो देखो काग्भुषण्ड जी ने कहा कि भगवन्! मैं ये जानना चाहता हूँ क्या तुम क्या अध्ययन करते हो? उन्होंने कहा हमसे ये उत्तर दीजिए क्या हम किस वस्तु का अध्ययन नहीं करते। मेरे प्यारे! देखो उस समय काग्भुषण्ड जी ने कहा क्या यही तो मैं जानना चाहता हूँ। तो राम ने कहा कि **हम सबसे प्रथम अपना अध्ययन करते हैं।** हम अपने जीवन में रूपक बनाते रहते हैं और रूपक बना करके हम अपने में निराकरण करते रहते हैं। शरीर रूपी यज्ञशाला को हम यज्ञशाला के रूप में ही दृष्टिपात करते हैं। मानो देखो इसमें एक यज्ञशाला के रूप में एक द्वार है और नाना इन्द्रियाँ मानो देखो उसमें आहुति देती चली जा रही है। वह होता ब्रह्म ब्रह्मे, वह होता कौन है, मानो उनसे कहाँ-कहाँ का समन्वय रहता है जो हमने अध्ययन किया है। हम अध्ययन करते हैं क्या हमारा जो मानव शरीर है हमें प्रथम को हमारा उपनयन संस्कार हुआ तो उस समय उपनयन संस्कार करके हमें ब्रह्मचरिष्यामि की उपाधि प्राप्त की गई और जब वह ब्रह्मचारी हम मानो देखो ब्रह्मचरिष्यामि बने तो हमने यह विचारा कि ये ब्रह्मचरिष्यामि ये क्या है? तो मानो देखो उसी काल में ये विचार किया क्या ''अग्नि भवतम् ब्रह्मे''। मानो देखो शरीर रूपी जो हृदयरूपी यज्ञशाला है हृदयरूपी जो गुफा है इसमें मानो देखो पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ नाना प्रकार के पदार्थों को ला करके, साकल्य को ला करके, चरु को ला करके मानो देखो वह हृदयरूपी यज्ञशाला में आहुति दे रहे हैं। वह आहुतियाँ क्या हैं? मानो देखो रुपम् ब्रह्मा असुताम भविस्तों, रूप, रस, गन्ध, मानो देखो जैसे गन्ध है, रूप है, रस है और शब्द है और मुनिवरों! देखो वह असुतम ब्रह्मा ये मानो देखो सर्वत्र हम प्रत्येक देवता से उसे लाते रहते हैं। ये इन्द्रियाँ प्रत्येक देवता से लाती हैं श्रोत्रों का जो समन्वय है वह दिशाओं से रहता है और मानो देखो वाणी का विषय रसों से रहता है और ये जो रसना मानो प्राण है

इसका सम्बन्ध पृथ्वी से रहता है और ये जो नेत्र हैं इनका सम्बन्ध सूर्य और अग्नि से रहता है। मानो देखो ये जो स्पर्श है इसका समन्वय वायु से और चन्द्रमा से रहता है। एक-एक मानो देखो देवता इसमें विद्यमान है। जब ये मानो देखो इनका साकल्य इनके रूप रस से इनका हम साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में जो हम याग करते हैं और वह याग जब हो रहा है तो मानो देखो हमारा जीवन पवित्र बन रहा है। **हृदयरूपी यज्ञशाला में ज्ञानरूपी अग्नि मानो प्रदीप्त हो रही है** और ये जो पञ्च महाभौतिक जो अन्तिम चरण की प्रतिभा अप्रतोभवासम्मवस्तिः मानो देखो इसमें जो स्वाहा दिया जा रहा है वह प्रिय याग हो रहा है। वह जो याग हो रहा है उससे बेटा! यजमान पवित्र बन रहा है। वह जो याग हो रहा है उससे अध्यात्मिकवाद की बेटा! नाना प्रकार की आभाओं का जन्म हो रहा है। वही तो जन्मन्दम् ब्रह्मे कृताम् लोकाम् वही तो बेटा! एक पवित्र यागों में परणित होने वाला एक मनोनीत हृदय को ग्राही बनाने वाला है।

देखो, इसका और सूक्ष्म रूप ले लीजिए। इस शरीर के, शरीर रूपी यज्ञशाला के मानो दस पात्र कहलाते हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कामेन्द्रियाँ कहलाती हैं। वह जो ज्ञानेन्द्रियाँ और कामेन्द्रियाँ हैं मानो देखो कहीं से कर्म को ला-ला करके इस मानो देखो उदर में प्रवेश कर रही हैं। वाणी के रूप की प्रतिभा का जन्म हो रहा है और वही तो मेरे प्यारे! देखो दस होता बन करके याग हो रहा है। यागाम् भविते लोकाम् हिरण्यम् मानो देखो आगे और हम गम्भीरता में प्रवेश करते हैं तो ग्यारह होता बन जाते हैं। ग्यारह होता देखो दसों इन्द्रियाँ और ग्यारहवाँ इनसे जो मनस्तत्त्व है प्रकृति का सूक्ष्मत्तम तन्तु है। मानो देखो वह ग्यारह दस इन्द्रियों से समावेश हो करके ग्यारहवें मन की कल्पना की जाती है। मानो देखो इसी प्रकार हम अपने को मानो देखो शरीररूपी सृष्टि के पिता की मानो आभा में रत्त हो जाते हैं और सृष्टि के पिता की हम वैज्ञानिकता में प्रवेश कर जाते हैं तो मानो बेटा! ये

एक हमारा प्रिय याग हो रहा है। यागाम् भविते लोकाम्, बेटा! देखो लोकों की प्रतिभा हमारे से आभा में रत्त हो रही हैं। तो मुनिवरों! देखो जब भगवान् राम ने ये उत्तर दिया और उत्तर दे दिया सम्भवा लोकाम् हिरण्यम् वृथाः। हे भगवन्! हे कागा! हे काग्भुषण्ड जी! हे ऋषिवर! हम सदैव ये अध्ययन करते रहते हैं। हम अपना अध्ययन करते हैं प्रारम्भ में अपना अध्ययन किया जाए क्योंकि आचार्य जब ये कहता है ब्रह्मवाचे ब्रह्मे चरिष्यामि। हे ब्रह्मचारी! अपनी इन्द्रियों को मुझे प्रदान करो। हम आचार्य को अपनी इन्द्रियाँ प्रदान कर देते हैं और जब वह उसमें पिरोयी जाती हैं मानो आचार्य के ज्ञान और विज्ञान से हमारी इन्द्रियाँ पिरोयी जाती हैं तो मानो देखो हमारा विद्यार्थी जीवन पवित्र बनता है। हम स्वतः अपना अध्ययन करते हैं। हम स्वतः अपने में रत्त हो करके परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्वरूप को अपने में ग्रहण करते रहते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषि ने ये मानो देखो भगवान् राम ने ऋषि को ये विवेचना प्रगट की—उन्होंने कहा हमारा विद्यम् ब्रह्मा कृतो लोकाम् हम ब्रह्मचारी हैं, ब्रह्मचरिष्यामि हैं। हम ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्म को ही ब्रह्म का अध्ययन करते रहते हैं। प्रकृति का अध्ययन करते रहते हैं। बाह्य जगत में देखो याग करते उसकी सुगन्धी को अपने में धारण करते रहते हैं तो बाह्य और आन्तरिक दोनों का समावेश हो जाता है। तो मानो समावेश होने से हमारे जीवन में सुगन्धी हो जाती है और वह सुगन्धी ही मानो देखो हमें हमारे जीवन का एक महा मनोनीतता में रत्त करा करके इस संसार सागर से पार हो जाते हैं, इससे दूरी हो जाते हैं।

देखो, भगवान् राम ने ये कहा कि हमें अपने जीवन में वेद ये कहता है कि हमें अपने जीवन में त्यागी बनना चाहिए, तपस्वी बनना चाहिए। आचार्यों ने हमें उपदेश दिया है क्या हम वास्तव में याग और तपस्या में परणित हो जाएँ। जैसे देखो यज्ञशाला में जब हम देखो बाह्य जगत में याग करते हैं समिधा अपने अस्तित्व को समाप्त करके अग्नि में ले करके मानो देखो अग्नि उस परमाणुवाद को बना करके साकल्य

के सहित, मानो शब्दों के सहित, वेद मन्त्रों के सहित वह द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है, वह द्यौ लोक में जाता रहता है। इसी प्रकार वह जो बाह्य जगत है, वह जो याग हम प्रातःकालीन आज कर रहे थे मानो वह हमें क्या शिक्षा देता है, क्या प्रेरणा दे रहा है। देखो समिधा के लिए ही तुम अपने को समाप्त करो और मानो अपने को समाप्त करके, अपनेपन को समाप्त किए बिना तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। मानो त्याग और तपस्या में परणित हो जाओ क्योंकि तुम अपने को ममता को त्यागो, अपने अहम् भाव को त्याग करके मानो तुम प्रेरित हो करके एक-एक वस्तु से नाना प्रकार का एक समूह एकत्रित हुआ–राम ने कहा कि एक समय नाना प्रकार के देखो कृतियों का, परमाणुओं का एक समूह एकत्रित हुआ था और वह समूह एकत्रित हो करके मानो उसका नामोकरण नियुक्त किया गया, उनका नामोकरण एक साकल्य बना। परन्तु साकल्य के रूप में क्या मानो होताजन आहुति दे करके स्वाहा कह देता है और स्वाहा कह करके मानो देखो वह शब्द उसका देखो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके उसका विचार, उसकी कृतिका मानो देखो द्यौ लोक में प्रवेश कर जाते हैं और वह द्यौ लोक में जा करके मानो देखो उसी प्राणी को, उसी आत्मा के शरीर को मानो देखो वहीं शब्द उसी को प्राप्त होता रहता है। विचार-विनिमय क्या है। राम ने एक समय कहा कि हे काग्भुषण्ड जी! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज कुछ ब्रह्मचारियों के सहित जिनमें मानो देखो हमने भी गति की मानो देखो, राम इत्यादियों को ले करके बेटा! देखो कहीं कजली वनों में भ्रमण करते हुए वे मानो देखो वहाँ से उपराम होते हुए वे दण्डक वनों में पहुँचे और दण्डक वनों में जा करके वहाँ मानो देखो एक कुतवाङ्ग वाचक एक राजा थे। मानो देखो उसके राष्ट्र में एक सोमभानुक ऋषि रहते थे और सोमभानुक ऋषि महाराज याग करते थे। वह नाना प्रकार के वनों में से साकल्य एकत्रित करते और उसके द्वारा याग करते थे। जब वह याग करते नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा तो वहाँ पूज्यपाद

गुरुदेव ने ये कहा क्या कर रहे हो ऋषिवर! उन्होंने कहा कि प्रभु मैं याग कर रहा हूँ। मेरा हृदय, मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। मैं अपने मानो देखो इस शब्दावली को अन्तरिक्ष में प्रवेश कराना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो जब महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने जब ऋषि से ऐसा कहा तो उन्होंने कहा कि भगवन्! हम भी याग करा सकते हैं? तो उस समय ऋषि ने कहा कि नहीं तुम याग नहीं करा सकते क्योंकि तुम्हारा जो हृदय है वह इतना याज्ञिक नहीं बना है जो मेरे याग में तुम आहुति दे सको। बड़ा आश्चर्य हुआ! वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा कि ऐसा क्यों कहा आपने? उन्होंने कहा कि प्रभु! मैं इस समय ब्रह्म की खोज में, मैं ब्रह्म की आभा में रत्त होना चाहता हूँ और मैं अपने वायुमण्डल को उसी प्रकार का बनाना चाहता हूँ। मानो देखो वह याग के द्वारा बनेगा। मेरे विचार मानो प्रत्येक स्वाहा के साथ में साकल्य के साथ में मानो देखो अग्नि की तरङ्गें उसको परमाणुओं को भेदन करके वायुमण्डल को पवित्र करेंगी, उसके पश्चात् मैं ब्रह्म की आभा में रत्त होना चाहता हूँ। मैं भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों को साकल्य के द्वारा नहीं चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो वह अनुष्ठान कर रहे थे तो विचार क्या वह वशिष्ठ मुनि महाराज ने स्वीकार किया। वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये स्वीकार किया कि वास्तव में तुम्हारा विचार विशुद्ध रूप में रत्त रह रहा है। तो मानो देखो इस प्रकार देखो भगवान् राम ने कहा तो भगवन्! उस याग को हमने दृष्टिपात किया। उस याग में वह सङ्कल्पोमयी याग था ऋषि जो सङ्कल्प करते थे वह वस्तु से परमाणु के रूप में प्राप्त हो जाती थी। तो इसी प्रकार हम प्रातःकालीन यहाँ याग करते हैं और जब वायुमण्डल पवित्र हो जाता है उसमें मानो अन्धकार नहीं रहता तो उसको धारण करना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि बाह्य जगत आन्तरिक जगत दोनों को समन्वय करना है और दोनों के समन्वय करके हमें अन्धकार को त्याग करके प्रकाश में जाना है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि के आश्रम में काग्भुषण्ड इत्यादि

देखो राम के उन शब्दों को पान करके मौन हो गए। उन्होंने कहा राम ने ये कहा था कि हे प्रभु!, हे ऋषिवर! हमें प्रत्येक वस्तु त्याग में ले जा रही है, प्रत्येक वस्तु निष्काम कर्म में ले जा रही है, प्रत्येक वस्तु मानो देखो हमें परमपिता परमात्मा की रचना का भान करा रही है। मेरे प्यारे! देखो राम ने ये कहा कि हम भौतिक याग में एक साकल्य के परमाणु को हम मानो दूसरों के ये नियम अपने को समाप्त करके देखो अपने में प्राप्त होना चाहते हैं। इसी प्रकार हमारा अध्ययन का यह विषय है हम आगे चलकर के राष्ट्र में प्रवेश करेंगे। तो राष्ट्र उसी काल में ऊँचा बना सकेंगे जबकि हमारे हृदय में त्याग प्रवृत्ति होगी और प्रत्येक प्राणियों के हृदयों को हम अपने हृदय से दोनों का मिलान करेंगे तो हम राष्ट्र को ऊँचा बना सकते हैं। राष्ट्र वैसे ऊँचा नहीं बनता है। तो मेरे प्यारे! देखो राष्ट्राणी ब्रह्मा वाचा प्रव्हे। सबसे प्रथम अपने शरीर रूपी राष्ट्र को हमें ऊँचा बनाना है उसके पश्चात् हमें बाह्य राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। देखो, यहाँ राजा का नाम विष्णु है। आज विष्णु की विवेचना तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मुझे वर्णन कराते रहते हैं, माता अरुन्धती मुझे वर्णन कराती रहती हैं। मैं इसी आभा में लगा हुआ हूँ, क्या मानो देखो हम राष्ट्र को विष्णु बनाएँ। पालन करने वाला प्रभु है उससे सहायता ले करके हम अपने जीवन की पालना करते हुए अपने विष्णु शरीर रूपी राष्ट्र को हम ऊँचा बनाएँ। जब तक हमारा शरीर नियन्त्रण में नहीं होगा, हमारा आत्मवत् पवित्र नहीं होगा, तब तक हम बाह्य जगत को ऊँचा नहीं बना सकते।

मेरे पुत्रों! देखो वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या है। राम कहते हैं भगवान् राम ने कहा है कि एक-एक वस्तु हमें प्रेरणा दे रही है। वेद मन्त्र भी बेटा! यही कह रहा है क्या एक-एक वेद मन्त्र हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रेरणा दे रहा है। हम प्रेरणादायक बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाएँ, शरीरूपी याग को ऊँचा बनाएँ, बाह्य याग को ऊँचा बनाएँ जिससे हम बेटा! संसार सागर से पार हो जाएँ, प्रत्येक मानव

इससे पार होना चाहता है। आओ मेरे प्यारे! विचार क्या मानो देखो काग्भुषण्ड जी ने वेद मन्त्र की आभा को ले करके वहाँ से उपरामता को प्राप्त हुए और विद्यालय में याग का क्रियाकलाप समाप्त हो गया।

मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या कह रहा है–कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जान करके उसके रचाए हुए ज्ञान और विज्ञान को अपनी क्रिया में लाते हुए इस संसार सागर से बेटा! पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करना है। समष्टि को लाना है और मुनिवरों! देखो अपनी आत्मा को जान करके प्रकाश में रत्त रहना है। अन्धकार अपने में कुछ अस्तित्व अन्धकार का नहीं है, सत्य का मानो देखो सत्य में ही रत्त रहना है ये है। बेटा! आज का वाक्य, मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या **मानव को, मानो देखो एक-एक वस्तु से प्रेरणा लेनी चाहिए, प्रेरणादायक बन करके और मुनिवरों! देखो त्यागमूर्ति बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाएँ।** ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् गतऊमाऽम् आपा रथपूब्रीवीशाहाः मामगत्प ब्रहाः वाचन्नाः आभ्याम् देवम् बृथाः वाचाः मनो ब्रह्मा गायणत्वामाना।

ओ३म् ज्ञनिता रथप्रहा मधु गायारथम् आपाऽम्।

ओ३म् द्यौ शरणम् ब्रह्म वा वाच्चन नमः।।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द!

दिनाँक : 3 मार्च, 1985

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यह मन हमारे आहार व व्यवहारों से उत्पन्न होता है।
2. जब मानव की सङ्कल्प शक्ति ऊँची बन जाती है तो उससे मानव के रोग भी शान्त हो जाते हैं।
3. सङ्कल्प हमें परमात्मा से मिलान कराता है, सङ्कल्प से हम राजा बन जाते हैं।
4. यदि पुरुषार्थ और सङ्कल्प मन, वचन, कर्म से हृदय में होता है तो वह ऊँचे शिखर पर पहुँचा देता है, इसका नाम सङ्कल्प है।
5. सङ्कल्प नाम परमात्मा है और विकल्प नाम प्रकृति का है।
6. विकल्प हम उसको कहते हैं जिसका न कोई आदि और न कोई अन्त होता है।
7. अहिल्या नाम पृथ्वी का है, गौतम नाम चन्द्रमा का है।
8. गौ नाम आत्मा का है और उसका जो पुत्रवत् बछड़ा है वह मन है।
9. यौगिकता प्राप्त होती है शुद्ध आहार व व्यवहार से।
10. संसार में एक को जानने से संसार जाना जाता है।
11. हमें आत्मा के लिए भोजन करने का प्रयत्न करना चाहिए। आत्मा का भोजन है ज्ञान-विज्ञान और जितने भी शुभ कर्म है।
12. नाभि में अमृत स्थान होता है, अमृत प्राप्त होता है, मनुष्य ब्रह्मचर्य से सजा हुआ होता है।
13. ऋषिजन मन्थन करते-करते परमात्मा को प्राप्त हो जाते हैं, परमात्मा के नियम के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करते।
14. हमें परमात्मा के अनुकूल अपना जीवन बना लेना चाहिए, परमात्मा की आज्ञा में विचरण करना चाहिए।
15. जब तक त्यागी तपस्वी नहीं बनेंगे इस राष्ट्र और समाज का कल्याण कदापि नहीं होगा।

चलो सोंहजनी तगान ।। ओ३म् ।। सोंहजनी तगान चलो

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्
यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है)

राष्ट्र कल्याणार्थ चतुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक 7 अक्टूबर 2019 दिन सोमवार से 13 अक्टूबर 2019 दिन रविवार तक

आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि जी) के शुभाशीर्वाद से ग्राम सोंहजनी तगान, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) की पुण्य भूमि पर द्वितीय बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन अत्यन्त श्रद्धा के साथ आयोजित किया जा रहा है। आप सब इस पावन अवसर पर परिवार व इष्ट मित्रों सहित आकर यज्ञाहुति व वेदोपदेश द्वारा जीवनोत्थान का मार्ग प्रशस्त करें तथा यथाशक्ति तन, मन, धन का सहयोग देकर पुण्यार्जन करें।

यज्ञ के ब्रह्मा : *आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, गुरुकुल बरनावा, बागपत*

आचार्य विद्वत्गण : आचार्य विनोद कुमार, योगाचार्य अरविन्द शास्त्री, आचार्य रविदत्त शास्त्री, डॉ. योगेश शास्त्री एवं मान्य सन्यासीवृन्द एवं विद्वानगण।

—: कार्यक्रम :—

सोमवार, दिनांक 7 अक्टूबर 2019 से दिनांक 12 अक्टूबर 2019 शनिवार तक (तद्नुसार अश्विन सुद नवमी तिथि से अश्विन सुदी पूर्णिमा तक)

ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)	:	प्रातः 6.00 बजे
ओ३म् ध्वजारोहन (प्रथम दिवस)	:	प्रातः 6.30 बजे
चतुर्वेद पारायण यज्ञ (देवयजन)	:	प्रातः 7.15 बजे से 10.00 बजे तक
वेदोपदेश व ईशभक्ति भजन	:	प्रातः 10.00 बजे से 11.00 बजे तक
यज्ञ उपदेश भजन व सन्ध्या	:	सायं 3.00 बजे से 6.00 बजे तक

रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर 2019 पूर्णिमा (समापन समारोह)

ब्रह्मयज्ञ एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति : प्रातः 6.00 बजे से 10.00 बजे तक
तत्पश्चात् उपदेश, आशीर्वाद एवं यज्ञप्रसाद (ऋषिलङ्गर)

विशेषः पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों का यौगिक साहित्य उपलब्ध रहेगा। ऋत्विग् एवं यजमान ईश्वर की उपासना में अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। भोजन एवं आवास की व्यवस्था ग्राम समाज की ओर से होगी।

आयोजक एवं निवेदक : *सभी ग्रामवासी सोंहजनी तगान, मुजफ्फनगर (उ.प्र.)*

यज्ञ स्थल : श्री बाबा सिद्ध शिव मन्दिर, सोंहजनी तगान, लक्ष्मीनगर (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : 9719822733, 6398524117, 9760392570, 9897940818, 9997094599, 9997979766, 9997515013

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

विशेष सूचना

माह अगस्त 2019 में यौगिक प्रवचन के पृष्ठ संख्या 39 पर प्रकाशित विशेष सूचना के अन्तर्गत साधारण सभा की बैठक की तिथि 8-9-2018 के स्थान पर **8-9-2019** माना जाए। अशुद्धि के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

मन्त्री वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 564
सितम्बर 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-09-2019
Published on 5th day of the same month